कविता : भाषा सीखने का आनन्दमयी साधन

अनीता शर्मा

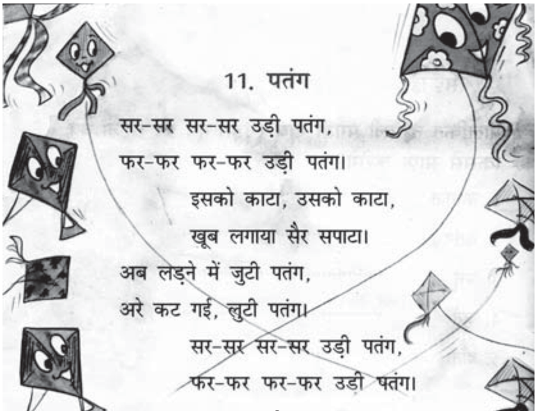


चित्र : 1

कविता भाषा सीखने का एक आनन्दमयी साधन है। कविता छन्दबद्ध होती है इस वजह से इसे लय व ताल में गाना सम्भव होता है और शायद इसी वजह से यह याद रखने में सहज हो जाती है। बच्चे जब मिलकर कक्षा में कविता गाते हैं तब भी काफ़ी ख़ुशनुमा माहौल बन जाता है। कई कविताओं में ध्वनियों का दोहराव होता है और तुकबन्दी के साथ नए शब्द आते हैं। इससे नए शब्द भी आसानी से शब्द भण्डार में जुड़ते रहते हैं व ध्वनियों से खेलने का मौक़ा भी मिलता है। मुझे लगता है शायद यही वजहें हैं कि कविता भाषा शिक्षण को सरल व रोचक बना देती है। और इसी वजह से कविता भाषा सीखने में अहम भूमिका अदा कर सकती है। शुरुआती कक्षाओं में कविता सुनने, सुनाने का महत्त्व और भी ज़्यादा होता है क्योंकि यह बच्चों और शिक्षक के बीच की दूरी को कम करने, बच्चे का कक्षा से जुड़ाव बनाने में भी काफ़ी मददगार हो सकती है, अगर बच्चों के स्तर उनकी दिलचस्पी और पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए कविताओं को चुना जाए और कक्षा में जगह दी जाए। इस लेख में मैंने अपनी पहली कक्षा में कविता 'पतंग' को कैसे किया और उस दौरान क्या-क्या हुआ, इसपर बात की है।

मुझे कविता सीखने का सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य कविता का रसास्वादन करना अर्थात कविता द्वारा आनन्द की अनुभूति करना लगता

है। इस पहले उद्‌देश्य को यदि सही मायने में हम प्राप्त कर सकें तो कई अन्य उद्‌देश्य स्वतः ही हासिल हो सकते हैं, या फिर उन उद्‌देश्यों को हासिल करना सरल हो सकता है। जैसे– यदि बच्चे कविताओं में मज़ा लेने लगें तो वे और कविताओं को भी पढ़ना चाहेंगे जिससे उनकी पढ़ने में रुचि बढ़ेगी। इसके अलावा, नई कविता पढ़ने व गाने में बच्चों को नए शब्दों की जानकारी तो होगी ही, साथ ही शब्दों के विभिन्न अर्थों को भी समझने की दिशा में वे आगे बढ़ेंगे। कविता में शब्दों को कई बार अलग ढंग से इस्तेमाल किया जाता है, जिससे शब्दों के अर्थ का दायरा भी व्यापक हो जाता है। शब्द भण्डार में यह वृद्धि सन्दर्भ ग्रहण की शक्ति भी विकसित करती है। यही नहीं, वे छोटी-छोटी तुकबन्दियाँ करना भी सीखते हैं। यह भी सम्भव है कि कविता को आगे बढ़ाने के लिए वे अपने आसपास की चीज़ों या घटनाओं को ध्यान से देखना भी सीखें। दूसरे शब्दों में, भाषा के विभिन्न पहलुओं को समझने में तो कविता मददगार होती ही है, लेकिन यह और भी कई चीज़ों को सीखने व समझने का माध्यम बन सकती है। यह अकसर कहते ही हैं कि कविता के माध्यम से बच्चों की सृजनात्मक व सौन्दर्यबोध शक्तियों का विकास होता है। इतना ही नहीं, मेरा मानना है कि कविता बच्चों का ध्यान केन्द्रित करने में भी सहायक होती है।


11. पतंग

सर-सर सर-सर उड़ी पतंग,
फर-फर फर-फर उड़ी पतंग।
इसको काटा, उसको काटा,
खूब लगाया सैर सपाटा।
अब लड़ने में जुटी पतंग,
अरे कट गई, लुटी पतंग।
सर-सर सर-सर उड़ी पतंग,
फर-फर फर-फर उड़ी पतंग।

चित्र : 2

कविता ‘पतंग’ पर किए गए काम के कुछ अनुभव

पहली कक्षा में कुल 32 बच्चे हैं। सभी ग्रामीण परिवेश से हैं। सभी के माता-पिता निम्न आर्थिक स्थिति वाले मज़दूर वर्ग के हैं। अधिकांश बच्चे पहली पीढ़ी से सीखने वाले हैं।

मैंने चुनी हुई कविता ‘पतंग’ पर काम करने के लिए योजना बनाई। इस कविता पर कक्षा में कैसे काम करूँगी, कौन-कौन सी गतिविधियाँ होंगी और उनपर काम कैसे होगा, इस बारे में विचार किया और योजना के मुख्य बिन्दुओं को नोट किया। साथ ही उन बिन्दुओं को भी लिखा जिनपर मैं बच्चों की समझ बनाना चाहती थी। मुख्य रूप से ये बिन्दु थे :

1. बच्चे कविता को बेहिचक गा पाएँ, गुनगुना पाएँ;
2. बच्चे कविता को समझ पाएँ, उसमें आए शब्दों को अर्थ दे पाएँ;
3. तुकान्त शब्दों को अलग निकाल पाएँ और वैसे ही नए शब्द बना पाएँ; और
4. कविता में आए कुछ शब्दों को पहचान पाएँ, धीरे-धीरे उनको पढ़ और लिख भी पाएँ।

फिर की जाने वाली गतिविधियों के बारे में सोचा। गतिविधियों की एक सूची बनाई, लेकिन सभी गतिविधियाँ सूची में दिए गए क्रम के अनुसार हुईं, ऐसा नहीं था। बच्चों के साथ जो काम होता जा रहा था, उसमें वो जो सीख रहे थे और जो मैं सिखाना चाहती थी, इसके बारे में सोचते हुए अगले दिन की गतिविधि, बनाई गई सूची में से चुन लेती थी। माने, मैंने इस सूची में थोड़ा लचीलापन रखा। आगे मेरे द्वारा किए गए काम का विवरण है।

पहला दिन

पहले दिन मैंने बच्चों से ‘पतंग’ शब्द पर ही बातचीत की। मैं चार्ट पर पतंग का चित्र बनाकर ले गई थी।

चार्ट पर बनाए पतंग के चित्र को बच्चों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए उसपर बातचीत की। जैसे–

शिक्षिका : "यह किसका चित्र है?"

बच्चे : "यह पतंग का चित्र है।"

शिक्षिका : "इस पतंग में कौन-कौन से रंग हैं?"

बच्चे : "इसमें लाल, पीला और हरा रंग है।"

शिक्षिका : "क्या आपको पतंग उड़ाना अच्छा लगता है?"

बच्चे : "हाँ, हमें पतंग उड़ाना अच्छा लगता है।"

शिक्षिका : "क्या आपने कभी पतंग उड़ाई है?"

बच्चे : कुछ बच्चों ने 'हाँ' में उत्तर देते हुए कहा कि उन्होंने अपने बड़े भाई और चाचा के साथ पतंग उड़ाई है। कुछ ने कहा कि उन्होंने पतंग उड़ाने की कोशिश तो की पर उड़ा नहीं सके। कुछ बच्चों ने बताया कि उन्होंने केवल पतंग की डोरी चरखी में लपेटी है।

शिक्षिका : "क्या तुम बता सकते हो पतंग किन-किन चीज़ों से बनती है?"

कुछ बच्चों ने काग़ज़ कहा तो कुछ ने पन्नी। वहीं कुछ बच्चों ने जोड़ा कि उसमें लकड़ी भी लगी होती है।

शिक्षिका : "और यह उड़ती कैसे है?"

पतंग हवा से उड़ती है। एक रस्सी से उसे बाँधते और उड़ाते हैं। कुछ बच्चों का कहना था कि इसे डोरी की सहायता से उड़ाया जाता है। कभी-कभी पतंग लेकर दौड़ने से और फिर हवा में छोड़ देने से भी यह उड़ने लगती है। डोरी में माँझा भी होता है और सद्दी भी। इस डोरी से हाथ भी कट सकता है और डोरी चरखी में लिपटी होती है।

यह बातचीत करने के बाद पहले मैंने बच्चों को कविता की लाइन धीरे-धीरे पढ़कर सुनाई ताकि वे शब्दों पर ध्यान दे सकें और उनकी ध्वनियों को समझ सकें। उसके बाद हम सभी ने कविता को मज़े के साथ गाया। कविता गाते समय बच्चे पतंग उड़ाने का अभिनय भी कर रहे थे, मसलन, डोरी को छोड़ना, खींचना, चरखी में लपेटना और कटी हुई पतंग को लपककर पकड़ने जाना, चेहरे पर ख़ुशी और पतंग लूटने का भाव। हमने 3-4 बार कविता गाई और लगा कि यह बच्चों को कुछ हद तक याद हो गई है। इसके बाद सभी बच्चों को एक-एक सादा काग़ज़ देकर अपनी पसन्द की पतंग का चित्र बनाने व उसमें रंग भरने को कहा। पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* में 'पतंग' पाठ में बने चित्र को भी दिखाया। बच्चों ने पतंग का चित्र बनाया व रंग भरे। तीन बच्चों को चित्र बनाने में थोड़ी कठिनाई हुई, तो उनकी सहायता सहपाठियों (रहनुमा, सोनम, अनुज) ने की। सभी बच्चों ने पतंग का चित्र बनाकर उसका नाम लिखा।

दूसरा दिन

दूसरे दिन कक्षा में मैंने धीरे-धीरे किताब से कविता को पढ़ा और बच्चों से कहा कि वे अपनी किताब में देखें और समझने की कोशिश करें कि मैं किस पंक्ति या शब्द पर हूँ। मैंने देखा कि बच्चे कुछ-कुछ जगह समझ पा रहे थे। इसके बाद मैंने कविता की आधी पंक्ति स्वयं गाई व आधी बच्चों ने गाकर पूरी की। आज कविता के शब्दों पर बात हुई। कौन-सा शब्द वे समझ गए और कौन-सा नहीं।

कविता में आए शब्दों मसलन, ख़ूब, सैर-सपाटा, जुटी-लुटी शब्दों पर बातचीत की। ख़ूब व सैर-सपाटा शब्दों को वाक्य में प्रयोग करने पर बच्चों ने सहज ही इसका अर्थ ग्रहण कर लिया। ये शब्द उनके घर में सामान्य बोलचाल की भाषा में भी प्रयोग किए जाते हैं। जुटी शब्द के अर्थ का बच्चे सटीक अनुमान नहीं लगा पाए, अतः इसका अर्थ शिक्षिका द्वारा उदाहरण देकर स्पष्ट किया गया। शब्द के अर्थ का अनुमान

बच्चों ने सही लगाया। (यह लुटी नहीं लूटी होगा)

तीसरा दिन

गतिविधि : यह विभिन्न आवाज़ों के बारे में थी। मसलन, बच्चों ने पतंग के उड़ने की आवाज़ सर-सर, फर-फर

घण्टी की आवाज़ : टन-टन, टन-टन

पानी गिरने की आवाज़ : टप-टप, टप-टप

पायल बजने की आवाज़ : छम-छम, छम-छम

हवा की आवाज़ : सर-सर, सर-सर

चूड़ियाँ बजने की आवाज़ : खन-खन, खन-खन

कपड़े उड़ने की आवाज़ : फर-फर, फर-फर आदि के बारे में बताया। जब बच्चे बता रहे थे तो मैं उन्हें ब्लैकबोर्ड पर लिखती जा रही थी। बातचीत पूरी होने के बाद मैंने उन्हें ब्लैकबोर्ड से इन शब्दों को लिखने के लिए कहा। टन-टन, टप-टप, आदि। बच्चे लिखने की कोशिश कर रहे थे और लिख भी पा रहे थे। जो बच्चे नहीं समझे, उनकी मैंने मदद की।

बच्चों को बारिश पड़ने की आवाज़ की गतिविधि करवाने के लिए उन्हें अपनी एक हथेली पर दूसरे हाथ की अंगुलियों से आवाज़ निकालने के लिए कहा। बच्चों ने पहले एक अंगुली, फिर दो, फिर तीन और फिर चार अंगुलियों से आवाज़ें निकाली। इसी क्रम में फिर तीन अंगुलियों, दो और एक अंगुली से आवाज़ निकालते हुए गतिविधि बन्द कर दी। इसको करने से बच्चों को बारिश शुरू होने, धीरे-धीरे तेज़ होने, फिर कम होने और थमने की आवाज़ की अनुभूति हुई। वे आवाज़ के प्रति सजग थे। उन्हें बहुत आनन्द आया और बच्चों ने यह गतिविधि दो बार और दोहराई।

चौथा दिन

आज कविता की पहली दो पंक्तियों को लिखने का काम किया। मैंने बोर्ड पर कविता की पंक्तियों को लिखा और हर शब्द पर अंगुली रखते हुए उन्हें पढ़ा। उसके बाद बच्चों से लिखने को कहा। जब बच्चे लिख रहे थे, वे शब्दों को बोल भी पा रहे थे क्योंकि उन्हें कविता याद थी। हालाँकि वे शब्द बहुत सुन्दर बना रहे हों ऐसा नहीं था, लेकिन लिखने की कोशिश कर रहे थे और शब्दों को पहचानने की भी। मसलन, सर शब्द बच्चों ने पकड़ लिया था, फर और पतंग भी। चौथे दिन इतना ही काम हुआ लेकिन मुझे इस बात का सन्तोष था कि सभी बच्चों ने लिखने का काम किया और कुछ शब्दों को पहचानने का भी। इसके बाद तुकान्त शब्दों पर बात कर उनके साथ काम किया। कविता में आए तुकान्त शब्दों मसलन, सर-सर, फर-फर,


चित्र : 3

काटा, सपाटा, जुटी से मिलते-जुलते तुकान्त शब्द बच्चों से बताने को कहा गया। बच्चों द्वारा बहुत-से तुकान्त शब्द बताए गए, मसलन, डर-डर, घर-घर, आटा, टाटा।

पाँचवाँ दिन

पाँचवें दिन चार-चार बच्चों के समूह बनाए। बच्चों को समूह में कविता पढ़नी थी, जो शब्द समझ नहीं आए उसे एक दूसरे की मदद से समझना था। पूरे समूह को ही कोई शब्द समझ न आने की स्थिति में उसे रेखांकित करना था। सभी बच्चों ने कविता पढ़ने की कोशिश की। बहुत-से शब्द वे समझ गए थे, लेकिन उड़ी, जुटी, सपाटा, लड़ने जैसे शब्दों में उन्हें समस्या आई। यह समस्या हर समूह में आई। पर मूल बात यह थी कि शब्द पढ़ना और लिखना वे समझ रहे थे। असल में मेरा यह प्रयास भी नहीं था कि बच्चे कविता के सभी शब्दों को एक ही बार में समझ जाएँ। एक कविता से एक-दो दिन में ऐसा हो पाना सम्भव नहीं है। मेरी कोशिश सिर्फ़ इतनी थी कि बच्चे पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया से जुड़ें और रोज़ उससे सम्बन्धित कुछ काम करें।

छठा दिन

कविता का समझ के साथ पठन अभ्यास : आज मैंने कुछ शब्दों व वर्णों को ब्लैकबोर्ड पर लिखा व उनसे पढ़ने के लिए कहा। कुछ बच्चे कविता में आए सरल शब्दों को ब्लैकबोर्ड पर लिखे जाने पर पढ़ने लगे और पाठ्यपुस्तक में भी पूरी कविता को अनुमान लगाकर पढ़ने लगे। कक्षा के 17 बच्चों ने पाठ्यपुस्तक से कविता पढ़ी व देखकर अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखी। 10 बच्चों ने कुछ शब्दों को (ख़ूब, सैर-सपाटा, लड़ने, जुटी-लुटी) अनुमान लगाकर पढ़ा। लेकिन यह साफ़ था कि कविता के बहुत से शब्द वे पढ़ पा रहे थे, और समझ के साथ पढ़ रहे थे। कक्षा के पाँच बच्चे कविता में आए बिना मात्रा वाले और सरल शब्दों को ही पढ़ पाए, शेष कविता को याद करने से याद हुए शब्दों और पढ़ते वक़्त उस याददाश्त का प्रयोग कर आगे आने वाले शब्द के बारे में अनुमान से ही पढ़ी गई।

मेरा अनुभव

बच्चों के साथ इस तरह कविता पर काम करने का यह मेरा पहला अनुभव था। कविता पर काम करते हुए मुझे महसूस हुआ कि अगर कविता बच्चों की रुचि व स्तर के अनुसार हो और उसमें गेयता हो तो वे जल्दी ही उसको गाना सीख जाते हैं। यह सीखना उनके उस कविता को पढ़ने और लिखने को सरल बनाता है, क्योंकि बच्चे अर्थ से जुड़ पाते हैं। मैंने पहले भी बच्चों के साथ कविताएँ की हैं लेकिन वह मुझे ही रूखी लगती थीं। मसलन, यह कविताएँ देखें :



चित्र : 4

नन्हे-नन्हे हमें न समझो हम भारत की शान हैं,
हमसे ही है धरती सारी, फैला यह आसमान है...

और

इब्नबतूता पहन के जूता निकल पड़े तूफ़ान में,
थोड़ी हवा नाक में घुस गई, घुस गई थोड़ी कान में...

इन दोनों में क्या कुछ फ़र्क़ है। कौन-सी कविता गाने-गुनगुनाने में ज़्यादा बेहतर महसूस होती है, कौन-सी कविता के शब्दों के अर्थ ज़ाहिर से हैं? फिर शुरुआती कक्षाओं में कविता पर काम शुरू करने का सबसे अहम और सहज

तरीक़ा है बच्चों के साथ मिलकर कविता गाना। न केवल बच्चों को बल्कि मुझे भी इसमें काफ़ी मज़ा आया। कभी सभी ने मिलकर गाया, कभी एक पंक्ति मैंने और अगली बच्चों ने। काम करते-करते बच्चों के अनुभव, प्रश्न और जवाब सुनते हुए भी कई गतिविधियाँ सूझ जाती हैं। उनको भी जगह देनी चाहिए।

आमतौर पर कविता को माहौल बनाने के लिए कक्षा में प्रयोग करते हैं, लेकिन यह उसका भरपूर अथवा उचित उपयोग नहीं है। मैंने अनुभव किया कि कविता सिर्फ़ कर लेने भर की ही गतिविधि नहीं है बल्कि इससे बच्चों को पढ़ना-लिखना सीखने हेतु पूरा सन्दर्भ मिलता है और अर्थ निर्माण भी हो पाता है। शुरुआती कक्षाओं में कविता बच्चों के मौखिक भाषा विकास के साथ-साथ पढ़ना-लिखना सिखाने में कारगर है और चले आ रहे तरीक़े से इतर एक और मज़बूत रास्ता सुझाती है।

चित्र 1 और 2 एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* भाग 1 से साभार और
चित्र 4 एकलव्य द्वारा प्रकाशित पुस्तक *बिट्टी और बिट्टू* से साभार

सन्दर्भ

शिक्षक सन्दर्शिका : कैसे पढ़ाएँ, *रिमझिम* भाग 2 (कविता की पढ़ाई)

रिमझिम पाठ्यपुस्तक, भाग 1, पाठ 11 पतंग (एनसीईआरटी)

ईएलईएम कार्यशाला में हुई चर्चा

हम भारत की शान हैं, वितान, मधुबन एजुकेशनल बुक्स, 109, दिल्ली

इब्नबतूता, एकलव्य चित्रकार्ड, एकलव्य, भोपाल

अनीता शर्मा राजकीय प्राथमिक विद्यालय शिवलालपुर अमरझंडा, काशीपुर, ऊधमसिंह नगर में विगत छह वर्ष से अध्यापन कार्य कर रही हैं। उन्हें बच्चों के साथ भाषा शिक्षण पर कार्य करना अच्छा लगता है।

सम्पर्क : anitapokhriyal2@gmail.com